सत्यमेव जयते

राजभवन सूचना परिसर, उत्तराखण्ड
प्रेस नोट

देहरादून 15 मार्च, 2011

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यावहारिक अनुभव से अर्जित पारम्परिक ज्ञान के संरक्षण, उनके विस्तार तथा व्यवहरण के प्रयास आज और अधिक प्रासंगिक हो गये है। भारत की गौरवशाली परम्परा, सभ्यता व इतिहास को जीवित रखने के लिए भावी पीढ़ियों को परम्परिक ज्ञान का निरन्तर लाभ देना आवश्यक है। इसके लिए *ग्रान्डमदर यूनिवर्सिटी* जैसी संस्थाओं द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय हैं।

यह विचार उत्तराखण्ड की राज्यपाल श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा ने ***नवदान्या*** संस्था द्वारा देहरादून के सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्र शीशमबाड़ा में संचालित ***ग्रान्डमदर यूनिवर्सिटी*** में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि देवभूमि उत्तराखण्ड में जहां प्रकृति ने अपार सम्पदा दी है, वहॉ पारम्परिक ज्ञान प्रणाली का विकसित स्वरूप विकास के नये आयाम स्थापित कर सकता है। प्रकृति पर आधारित जीवन चर्चा (विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में) के निरन्तर दीर्घकालिक लाभ का उल्लेख करते हुए राज्यपाल ने कहा कि केवल औद्योगिक विकास को विकास कहना उचित नहीं होगा। उन्होंने कहा कि पारम्परिक ज्ञान प्रणाली के साथ उन्नत तकनीक से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग आम जनता की कठिनाईयों को काफी सीमा तक कम कर सकता है। विश्वविद्यालयों को इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए चिन्तन करना होगा। केवल किताबी ज्ञान से समस्याओं का समाधान सम्भव नहीं है।

राज्यपाल ने पर्वतीय क्षेत्र की महिलाओं के जीवन की कठिनाईयों की ओर सबका ध्यान आकर्षित करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि अनुभव से सृजित पारम्परिक ज्ञान को परस्पर आदान–प्रदान करके सीखने–सिखाने का अभिनव प्रयोग समाज में सुखद परिणाम लायेगा।

पारम्परिक ज्ञान, जैव विविधता तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित **नवदान्या** द्वारा **ग्रान्डमदर यूनिवर्सिटी** में तीन पीढ़ियों के बीच एक साथ सम्वाद स्थापित करने के उद्देश्य से **बीजा विद्यापीठ** में आयोजित तीन दिवसीय पाठ्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रतिभागियों तथा जन–समूह को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल ने पारम्परिक ज्ञान से जुड़े कई अनुभवों का उल्लेख भी किया।

उन्होंने कहा कि प्रायः पाश्चात्य देशों की तकनीक, वैज्ञानिक शोध तथा अवधारणाएं एशियाई देशों के अनुकूल नहीं होते विशेतः हमारे देश के लिए क्योंकि हमारे देश में **परिवार** की गौरवशाली सुदृढ़ अवधारणा है।

इस अवसर पर **नवदान्या** की संस्थापक डा0 वंदना शिवा ने कहा कि नानी, दादी के अनुभवों तथा सीख से प्राप्त ज्ञान सुन्दर ढंग से जीना सिखाती है। रिश्तों की संपदा को सर्वोपरि बताते हुए उन्होंने व्यावहारिक ज्ञान, परम्परा तथा मूल्यों पर आधारित विकास को इंसानियत के लिए आवश्यक बताया।

कार्यक्रम में राज्यपाल के आह्वान पर जापान में भूकम्प व सुनामी से प्रभावित लोगों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया।

राज्यपाल द्वारा डा0 वंदना शिवा को **राज राजेश्वरी** सम्मान से सम्मानित किया गया, जो कि पी. एच.डी. चैम्बर ऑफ कामर्स तथा राज्य योजना आयोग द्वारा दिया गया है।

कार्यक्रम में पद्म विभूषण सुविख्यात पर्यावरणविद् श्री सुन्दर लाल बहुगुणा उनकी पत्नी सुश्री विमला बहुगुणा ग्रान्ड मदर यूनिवर्सिटी की कुलपति सुश्री ऊषा मैरा, एडीसी वी.के.कृष्णकुमार सहित संस्था के पदाधिकारी, राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से आई वरिष्ठ महिलाएं (दादी,नानी) विदेश से आये कई शोधार्थी तथा स्थानीय जनसमुदाय उपस्थित था।

————————0————————

सूचना अधिकारी श्री राज्यपाल, उत्तराखण्ड टेली0 फै0–0135–2756172 मो0न0:–9456590619